प्रिय अभ्यर्थियों,

भारतीय संस्कृति का अध्ययन अत्यधिक रूचिकर हो सकता है, परन्तु इसके अध्ययन का तरीका उचित होना चाहिए। अभ्यर्थियों के द्वारा किया गया एक बहुत सामान्य प्रश्न है कि संस्कृति के अध्ययन के लिए किस एक पुस्तक को आधार बनाया जाए। परन्तु इस प्रकार की कोई एक पुस्तक बताए जाने पर अभ्यर्थियों को दो प्रकार की समस्याओं का सामना करना होगा। प्रथम, इस प्रकार की कोई पुस्तक, जो मुख्य परीक्षा एवं प्रारम्भिक परीक्षा में संस्कृति के दायरे में आने वाले प्रश्नों को समेट सके, उपलब्ध नहीं है। दूसरे, संबंधित पुस्तक के सहारे अभ्यर्थी साहित्य, स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्र कला आदि पर प्रचुरता से तथ्यों का संकलन करना शुरू कर देंगे और चूंकि वे उन तथ्यों के बीच तारतम्यता नहीं स्थापित कर सकेंगे इसलिए जितनी शीघ्रता से वे तथ्य उनके स्मरण कोश में आएंगे उससे भी अधिक शीघ्रता से बाहर निकल जाएंगे। लगभग एक से दो सप्ताह तक यह बौद्धिक हठयोग चलता रहेगा, फिर वह पुस्तक बुक-सेल्फ के किसी भाग में सज जाएगी।

तैयारी की गंभीरता को समझने के लिए अभ्यर्थियों से मेरा एक सुझाव है कि वे तैयारी शुरू करने से पूर्व 2013 से 2023 तक के ग्यारह वर्षों के प्रारम्भिक परीक्षा एवं मुख्य परीक्षा दोनों प्रश्न पत्रों का अध्ययन अवश्य करें, फिर उन्हें प्रश्नों के दायरों का ज्ञान होगा। मुख्य परीक्षा के प्रश्नों की परिधि बहुत ही व्यापक है। प्रश्नों का विस्तार 'तांडव नृत्य' एवं 'चोल कला' से लेकर 'संगम साहित्य' तथा 'हड़प्पाई नगरीय संरचना', 'मध्यपाषाणकालीन कला' तथा 'भारत की सांस्कृतिक विविधता' तक रहा है। कुछ प्रश्नों का स्वरूप तो इतना जटिल एवं स्तरीय रहा है जहाँ पुस्तकीय ज्ञान अपर्याप्त रह जाता है, उदाहरण के लिए -

1. सांस्कृतिक विविधता के चार कारकों को निर्देशित कीजिए तथा राष्ट्र-निर्माण में उनके योगदान को दर्शाइए।
2. विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के बाद भी तक्षशिला एक विश्वविद्यालय का दर्जा नहीं प्राप्त कर सका, जबकि नालंदा एक विश्वविद्यालय था। परीक्षण कीजिए।
3. मध्यपाषाणकालीन चित्रकला के सौंदर्य बोध को स्पष्ट कीजिए तथा आधुनिक मानव के सौंदर्य बोध से उसकी तुलना कीजिए।
4. बौद्ध स्तूप-कला, लोक-वर्ण्य विषयों एवं कथानकों को सफलतापूर्वक बौद्ध आदर्श में परिवर्तित करती है। विशदीकरण कीजिए।
5. धर्म-निरपेक्षता के नाम पर हमारी प्रथाओं के सामने क्या-क्या चुनौतियाँ हैं?
6. क्या हमारे राष्ट्र में सर्वत्र लघु भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र हैं? उदाहरणों के साथ सविस्तार स्पष्ट कीजिए।

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर बहुत ही विकसित दृष्टि की अपेक्षा रखता है। प्रथम प्रश्न में प्राचीन काल तथा मध्यकाल में सांस्कृतिक विविधता के चार कारकों को दर्शाते हुए यह बताना आवश्यक है कि कैसे वह विविधता में एकता के भाव को स्थापित करता है। उसी प्रकार, आगे के सभी प्रश्न उत्तर-लेखन में समग्र दृष्टिकोण की अपेक्षा रखते हैं।

प्रारम्भिक परीक्षा के प्रश्नों का दायरा तो और भी विस्तृत है। कुछ उदाहरणों के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट किया जा सकता है-

1. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
   1. बोधिसत्व हीनयान बौद्ध संप्रदाय की केन्द्रीय संकल्पना है।
   2. बोधिसत्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करूणामय माना गया है।
   3. बोधिसत्व समस्त सचेतन प्राणियों को प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिए स्वयं की निर्वाण प्राप्ति विलम्बित करता है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) 2 और 3

   (c) केवल 2 (d) 1, 2 और 3
2. मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
   1. तमिल क्षेत्र के सिद्ध (सित्तर) एकेश्वरवादी थे तथा मूर्ति पूजा की निंदा करते थे।
   2. कन्नड़ क्षेत्र के लिंगायत पुनर्जन्म के सिद्धांत पर प्रश्न चिह्न लगाते थे तथा जाति अधिक्रम को अस्वीकार करते थे।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 (d) न तो 1, न ही 2
3. कलमकारी चित्रकला निर्दिष्ट करती है-

   (a) दक्षिण भारत में सूती वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी।

(b) पूर्वी भारत में बाँस के हस्तशिल्प पर हाथ से किया गया चित्रांकन।

(c) भारत के पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में ऊनी वस्त्र पर ठप्पे (ब्लॉक) से की गई चित्रकारी।

(d) पश्चिम भारत में सजावटी रेशम वस्त्र पर हाथ से की गई चित्रकारी।

4. भारत के सम्प्रतीक के नीचे उत्कीर्ण भारत की राष्ट्रीय आदर्शोक्ति 'सत्यमेव जयते' कहाँ से ली गई है?

(a) कठोपनिषद्

(b) छान्दोग्य उपनिषद्

(c) ऐतरेय उपनिषद्

(d) मुंडकोपनिषद्

उपर्युक्त प्रश्नों के अतिरिक्त साहित्य, संवत, जातीय तथा जनजातीय समूह से संबंधित भी प्रश्न होते हैं। प्रश्नों की विविधता तथा टॉपिक की व्यापकता को देखते हुए मात्र अक्षर ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि 'संस्कृति' को विचार श्रृंखला का हिस्सा बनाना होगा। यह काम कठिन नहीं है, केवल इसके लिए वास्तविक युक्ति लगाने की जरूरत होगी। यह युक्ति सामान्य अध्ययन के अन्य खंडों पर भी लागू होगी। सामान्य अध्ययन के चार पत्रों में अभ्यर्थियों को लगभग 13 विषय खंडों (अगर हम समसामायिक मुद्दों को भी शामिल करते हैं) का अध्ययन करना पड़ता है। इतने बड़े बौद्धिक अधिभार को उसे अकेले वहन करना होता है - वह भी ऐसी स्थिति में जबकि उसे विश्वविद्यालयी शिक्षा पद्धति में उस प्रकार का बौद्धिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। इसलिए उसे अध्ययन की व्यावहारिक युक्ति अपनानी आवश्यक है। इस युक्ति के तहत दो बातों पर बल देने की जरूरत है। प्रथम, प्रत्येक टॉपिक का अध्ययन दूसरे टॉपिक के अध्ययन को सहज बना दे तथा संपूर्ण विषय खंड के ज्ञान में अभिवृद्धि करे। दूसरे, एक विषय खंड को अध्ययन के क्रम में दूसरे विषय खंड से तारतम्यता स्थापित करने का प्रयास करे। इससे विषय-वस्तु में दिलचस्पी बढ़ेगी तथा तथ्यों को स्मरण रखना भी आसान हो जाएगा। हम अध्ययन की इस युक्ति का प्रयोग 'संस्कृति एवं विरासत' के अध्ययन से आरंभ करते हैं। अभ्यर्थी इसका प्रयोग अन्य विषय खंडों के अध्ययन में भी कर सकते हैं। संस्कृति एवं विरासत पर एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करने के लिए निम्नलिखित पहलुओं का ज्ञान आवश्यक है-

1. **संस्कृति एवं विरासत का अर्थ-अन्वेषण करना** - इसके लिए संस्कृति एवं सभ्यता तथा संस्कृति एवं धर्म के संबंधों को समझना आवश्यक है। साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि संस्कृति में कौन-कौन से तत्व शामिल होंगे।

2. **संस्कृति एवं विरासत की व्यापक समझ को विकसित करने के लिए अध्ययन की विधि** - प्राचीन काल से आधुनिक काल के बीच संस्कृति के विभिन्न पहलुओं; यथा- धर्म, साहित्य, कला में परिवर्तनों को रेखांकित करना फिर हमें यह ज्ञात होगा कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार विविधता में एकता का उदाहरण है।

3. **संस्कृति के अध्ययन; यथा- साहित्य एवं कला के अध्ययन का महत्व जानना** - यह जानना बहुत आवश्यक है, तभी संस्कृति की वास्तविक समझ विकसित होगी।

4. **संस्कृति के अध्ययन में अंतर्अनुशासनात्मक दृष्टिकोण के महत्व को समझना** - इसके तहत विदेश नीति, अर्थव्यवस्था, संविधान एवं राष्ट्र निर्माण पर इसके प्रभाव का आकलन करने की जरूरत है।

■ **संस्कृति एवं विरासत से तात्पर्य:-**

'संस्कृति एवं विरासत' खंड का अध्ययन, टॉपिक की मौलिक समझ के साथ आरंभ होना चाहिए। सामान्यत: 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है। परंपरागत अर्थ में संस्कृति से तात्पर्य है कलात्मक सृजन एवं बौद्धिक उपलब्धियाँ। इस अर्थ में संस्कृति किसी समुदाय के साहित्य, स्थापत्य कला, शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं चित्रकला के रूप में व्यक्त होती है। इस अर्थ में संस्कृति एवं विरासत दोनों एक-दूसरे के निकट हैं। दूसरे अर्थ में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग मानवशास्त्री करते हैं। मानवशास्त्री संस्कृति का अर्थ जनसामान्य की सोच, उनके रीति-रिवाज, उनकी मानसिकता तथा उनकी परंपरा के अध्ययन से लगाते हैं।

वस्तुत: मानवशास्त्रियों का ध्यान उच्च संस्कृति पर नहीं होता, अपितु वे उन लोगों की मानसिकता के अध्ययन पर, जो समाज के हाशिए पर होते हैं, बल देते हैं। वर्तमान में 'संस्कृति' शब्द को बहुचर्चित बनाने में मानवशास्त्रियों की बड़ी भूमिका है। मानवशास्त्रियों के प्रभाव में ही अध्ययन की एक पृथक शाखा 'कल्चरल स्टडीज' का विकास हुआ है। 'कल्चरल स्टडीज' का बल उन लोगों की मानसिकता के अध्ययन पर है जो समाज के हाशिए पर हैं। कल्चरल स्टडीज ने सामाजिक विज्ञान की प्रत्येक शाखा को प्रभावित किया है; यथा- इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध आदि।

जहाँ तक सिविल सेवा परीक्षा का सवाल है तो इसके पाठ्यक्रम में संस्कृति की परिधि में दोनों शामिल हो जाते हैं आभिजात्य संस्कृति तथा जनसामान्य से संबंधित संस्कृति। 'तांडव नृत्य', 'नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय', 'कृष्णदेव राय के काल की साहित्यिक उपलब्धियाँ' - ये सभी समाज

की आभिजात्य संस्कृति की ओर संकेत करते हैं, वहीं दूसरी तरफ 'मध्यपाषाण चित्रकला' जनसामान्य संस्कृति से संबद्ध है। अभ्यर्थी को यह ज्ञात हो कि बढ़ते हुए प्रजातंत्र के युग में अन्य मानविकी विषयों की तरह संस्कृति का भी जनवादीकरण हुआ। स्वाभाविक रूप में 'क्लासिकल' की जगह 'लोक' का महत्व बढ़ने लगा। यथा- लोक संगीत, लोक नृत्य, टेराकोटा फिगर्स आदि।

■ **संस्कृति एवं सभ्यता में क्या संबध है?**

सभ्यता एवं संस्कृति के बीच के संबंध को निर्धारित करना अपने आप में एक जटिल प्रश्न है क्योंकि इन दोनों को कई रूपों में परिभाषित किया जाता रहा है। प्रथम, प्राचीन समुदाय के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति का अर्थ है एक प्रकार की जीवन शैली जो एक विशिष्ट क्षेत्र में प्रचलित रही थी, किन्तु जब यह जीवन शैली एक विस्तृत क्षेत्र में फैल गई तथा एक मानदंड के रूप स्थापित हो गई, तो उसे 'सभ्यता' कहा गया। उदाहरण के लिए, हड़प्पा सभ्यता से पूर्व कई क्षेत्रीय संस्कृतियाँ कायम थीं। उनमें से किसी एक ने अपने क्षेत्र से आगे बढ़कर एक बड़े क्षेत्र में मानक जीवन शैली का निर्माण कर दिया, तो फिर वह सभ्यता कही जाने लगी। दूसरे अर्थ में सभ्यता को संस्कृति की उच्चतम स्थिति माना जाता है। कुछ विद्वान प्राचीन सभ्यता के विकास को नगरीकरण एवं लेखन कला के ज्ञान से भी जोड़ने का प्रयास करते हैं। इस अर्थ में सभ्यता उच्च श्रेणी के भौतिक जीवन का प्रतीक बन जाती है, किन्तु जैसाकि आबिद हुसैन मानते हैं कि उच्च स्तर के भौतिक जीवन में संस्कृति का अंश तभी आता है, जब वह भौतिक जीवन, भौतिक सुख के साथ उच्च नैतिक मूल्यों को प्राप्त करने का साध न बने। किन्तु जब ऐसा जीवन नैतिक मूल्यों में कुछ को तिलांजलि देता है, तब फिर वह संस्कृति का विरोधी बन जाता है।

फिर एक अन्य अर्थ में सभ्यता एवं संस्कृति को बाह्य आवरण तथा आंतरिक गुण से जोड़ने का प्रयास किया गया है। दूसरे शब्दों में, अगर सभ्यता बाह्य आवरण है, तो संस्कृति आंतरिक गुण। एक फूल के उदाहरण से इसे स्पष्ट किया जा सकता है। फूल का बाह्य सौंदर्य, उसकी पंखुड़ियां सभ्यता है तो उससे निकलने वाली सुंगध संस्कृति। बाह्य आवरण की तुलना में आंतरिक गुण अधिक महत्वपूर्ण होता है। कई बार बाह्य आवरण पर अधिक बल दिए जाने के कारण आन्तरिक गुण से ध्यान हट जाता है। अत: कई विद्वान दोनों के विकास को परस्पर विरोधी के रूप में भी देखने लगते हैं। उदाहरण के लिए, एक जर्मन विद्वान स्पेंगलर कहते हैं कि जब सभ्यता का विकास होता है, तो संस्कृति का पतन हो जाता है।

■ **वर्तमान में हम सभ्यता की चर्चा बहुत कम सुनते हैं, किंतु संस्कृति की चर्चा बहुत अधिक हो रही है। इसका क्या कारण है?**

जैसाकि हम जानते हैं कि जब सभ्यता का प्रसार होता है, तो उसके अंदर कई अन्य संस्कृतियां दब जाती हैं। वस्तुत: कोई एक संस्कृति जब उच्च स्तर पर पहुँच जाती है तो वह सभ्यता का रूप ले लेती है तथा अपने अन्दर वह कई अन्य संस्कृतियों को दबा लेती है। इस प्रकार सभ्यता में एक प्रकार का अभिजात्यपन आ जाता है अर्थात् वह समाज के प्रभावी वर्ग से जुड़ जाती है। जबकि समाज के दलित और पिछड़े वर्ग उस स्तर पर नहीं पहुँच पाते।

किंतु आगे जैसे-जैसे जनतांत्रीकरण होता गया, वैसे-वैसे दलित और पिछड़े वर्ग का उत्थान आरंभ हुआ। इसी क्रम में विद्वानों और बुद्धजीवियों का ध्यान उन भूली-बिसरी संस्कृतियों की ओर गया तथा फिर उनका पुनर्अन्वेषण आरंभ हो गया। यही वजह है कि वर्तमान में सभ्यता की तुलना में संस्कृति पर ज्यादा बल दिया जाता है।

■ **क्लासिकल आर्ट से क्या तात्पर्य है? किस स्थिति में कला क्लासिकल मानदंड ग्रहण करती है?**

जब कला और साहित्य विकास के उस स्तर पर पहुँच जाती है कि वह आने वाले युगों की कला एवं साहित्य को प्रभावित करने लगती है अर्थात् वे एक मानदंड के रूप में स्थापित हो चुके हैं और यही मानदंड शास्त्रीय अथवा क्लासिकल कहलाते हैं। भारतीय इतिहास में कुछ काल ऐसे हुए, जब कला ने क्लासिकल मानदंड ग्रहण किए। उदाहरण के लिए, कला विकसित होती हुई गुप्तकाल तक आ गयी और फिर गुप्तकाल में इसने क्लासिकल मानदण्ड ग्रहण कर लिए। उसी प्रकार पल्लव कला ने चोल काल तक क्लासिकल मानदंड ग्रहण किए। अंत में सल्तनत कालीन स्थापत्य ने मुगल काल तक क्लासिकल मानदंड प्राप्त कर लिए।

■ **संस्कृति एवं धर्म में क्या संबंध होता है?**

संस्कृति के कई पहलू होते हैं; यथा- साहित्य, कला, जीवन, दृष्टिकोण, खान-पान, रहन-सहन तथा धर्म। जैसाकि हम देखते हैं कि धर्म भी इसका एक पहलू होता है, परन्तु धर्म के दो पक्ष होते हैं- तत्व चिन्तन एवं कर्मकाण्ड। चाहे कोई भी धार्मिक पंथ हो, परन्तु उसका तत्व चिन्तन मानव कल्याण से जुड़ा होता है। इस रूप में सभी धार्मिक पंथ अपने मौलिक चिन्तन में एक-दूसरे के निकट होते हैं, परन्तु कालान्तर में धार्मिक पंथ कर्मकाण्ड की एक ऐसी पद्धति विकसित कर लेते हैं जो मूलभूत मानवीय मूल्यों से टकराने लगते हैं तथा एक धार्मिक पंथ की दूसरे धार्मिक पंथ से टकराने की संभावना काफी बढ़ जाती है। तब फिर धर्म, संस्कृति का विरोधी बन जाता है। इसी तरह की स्थिति में भारत की समन्वित संस्कृति के विरोध में काम करते हुए धर्म ने हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान के रूप मे सरहदें खींच दीं।

■ **क्या संस्कृति में भी प्रतिगामी तत्व हो सकता है जिसमें बदलाव लाने की जरूरत होती है?**

कालांतर में चलकर संस्कृति के अंतर्गत दो प्रकार की खामियाँ सतह पर आने लगती हैं। प्रथम, 'संस्कृति' शब्द अपने आप में जटिल है, अत: धीरे-धीरे इसमें कुछ ऐसी रीति-रिवाज एवं परंपराएँ शामिल की जाने लगती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने धर्म के नाम पर बाल विवाह तथा सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराई को चलाने का प्रयास किया तथा धर्म को संस्कृति का एक हिस्सा माना गया। तब फिर 19वीं सदी के भारत में राजा राममोहन राय से लेकर स्वामी विवेकानंद तक विभिन्न बुद्धिजीवी एवं सुधारक इसके विरोध में खड़े हुए तथा इन बुराईयों को धर्म एवं संस्कृति से पृथक करने में कामयाबी पाई।

दूसरे, मूल्य (Value) समाज सापेक्ष होता है। जैसे-जैसे मानव समाज विकसित होता जाता है तो समय के साथ कुछ मानव व्यवहार एवं आचरण, जिन्हें संस्कृति का एक हिस्सा माना जाता रहा है, असंबद्ध हो जाते हैं और फिर उनमें बदलाव लाने की जरूरत पड़ती है।

■ **क्या संस्कृति का दुरूपयोग भी किया जा सकता है?**

इतिहास की तरह संस्कृति का दुरूपयोग भी संभव है। समाज के निहित स्वार्थ, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के नाम पर सामाजिक-धार्मिक बुराईयों को पनाह देते हैं। उदाहरण के लिए, जब राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे तब राधाकान्त देव जैसे परंपरावादी इसे धर्म एवं संस्कृति पर हमला करार दे रहे थे। उसी प्रकार वर्तमान में जब 'तीन तलाक' एवं 'निकाह-हलाला' जैसी पद्धति को समाप्त करने की माँग की जाती है तो मुस्लिम रूढ़िवादी तत्व धर्म एवं इस्लामी संस्कृति का हवाला देकर उसे सुरक्षित रखने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए भारत को एक सम्यक् सांस्कृतिक नीति बनाने की जरूरत है। जिस प्रकार राष्ट्र के विकास के लिए विज्ञान नीति, रक्षा नीति, विदेश नीति आदि आवश्यक है, उसी प्रकार सांस्कृतिक नीति भी आवश्यक है।

■ **हम कला और साहित्य का अध्ययन क्यों करते हैं?**

कला और साहित्य में किसी भी समुदाय का जीवन-दृष्टिकोण, सोच एवं सौंदर्याभिरूचि (Aesthetic sense) व्यक्त होती है। पिछले सैकड़ों, हजारों वर्षों से हमारे पूर्वजों की सोच और सौंदर्याभिरूचि व्यक्त होती रही है। जब हम इनका अध्ययन करते हैं, तो स्वाभाविक रूप में हमें अपने पूर्वजों की सोच और सौन्दर्याभिरूचि के क्रमिक विकास को समझने का अवसर मिलता है। फिर हम यह मूल्यांकन कर पाते हैं कि हम बौद्धिक-कलात्मक और नैतिक विकास की दृष्टि से कहाँ ठहरते हैं। जिस प्रकार हम इतिहास के माध्यम से राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढाँचे के क्रमिक विकास को समझने का प्रयास करते हैं, उसी प्रकार हम कला और साहित्य के माध्यम से जीवन-रूचि और सौन्दर्याभिरूचि के विकास को समझने का प्रयास करते हैं।

■ **भारतीय संस्कृति को बहुलवादी संस्कृति (Polyphonic Culture) का उदाहरण क्यों माना जाता है?**

भारतीय संस्कृति का विकास कुछ इस तरह हुआ कि इसका स्वर बहुलवादी हो गया। प्राचीन काल में आर्य संस्कृति तथा गैर-आर्य संस्कृति के बीच सामंजस्य देखा जा सकता है। उसी प्रकार, उत्तर एवं दक्षिण की संस्कृति के बीच सामंजस्य देखा गया। आर्य संस्कृति में यज्ञ की प्रधानता थी, जबकि गैर-आर्य संस्कृति में भक्ति, अवतारवाद एवं मूर्ति पूजा की प्रवृत्ति प्रबल रही। आगे आर्य एवं गैर-आर्य तत्वों के मिश्रण से हिन्दू धर्म अथवा हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ। उसी प्रकार उत्तर भारत में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन जिस किसी भी धार्मिक पंथ का उद्भव हुआ, उसने दक्षिण की ओर अवश्य प्रस्थान किया। उत्तर में विकसित उपनिषद् का अद्वैत चिंतन दक्षिण में शंकराचार्य के अंतर्गत परिष्कृत एवं विकसित हुआ। अशोक के अंतर्गत विकसित गुफा वास्तुकला ने पल्लवकालीन गुफा मंदिर के रूप में पूर्णता प्राप्त की।

मध्यकाल में भक्ति एवं सूफी आन्दोलन गांगी-यमुनी संस्कृति के रूप में व्यक्त हुआ। उसी प्रकार, सल्तनत काल एवं मुगल काल में स्थापत्य के क्षेत्र में इस्लामी एवं भारतीय तत्वों के (मेहराबी एवं शहतीरी शैली) के बीच सामंजस्य के परिणामस्वरूप नई शैली का विकास हुआ। यही सामंजस्य चित्रकला एवं संगीत कला आदि क्षेत्रों में भी देखने को मिलता है। इन्हीं करणों से भारतीय संस्कृति का स्वरूप बहुलवादी है।

■ **संस्कृति एवं विरासत की समझ अन्य विषयों के अध्ययन में कैसे उपयोगी हो सकती है?**

अभ्यर्थियों को संस्कृति का अध्ययन करते हुए अंतर्अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इससे संस्कृति के साथ अन्य विषयों की समझ भी विकसित होगी। विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के साथ इसके संबंधों को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

विदेश नीति के संचालन में संस्कृति एक महत्वपूर्ण घटक बनकर उभरी है। किसी भी राष्ट्र की सॉफ्ट पावर की वृद्धि में संस्कृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान में कल्चरल डिप्लोमेसी (Cultural diplomacy) विदेश नीति का महत्वपूर्ण घटक बन गयी। इस आधार पर भारत अपने पड़ोसी क्षेत्र का विस्तार कर दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों तक

पहुँचने के लिए आतुर है। उसी प्रकार पश्चिम एशिया तथा अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों के साथ संपर्क में प्रोजेक्ट मौसम (Project Mausam), जो कल्चरल मिनिस्ट्री की पहल पर शुरू किया गया है, महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला है।

राष्ट्र निर्माण में संस्कृति की समझ कितनी उपयोगी हो सकती है इसका सबसे बड़ा उदाहरण है एक राष्ट्र के रूप में भारत की सफलता और इसका कारण रहा है हमारे संविधान निर्माताओं के द्वारा भारत के विविधतामूलक चरित्र को समझना तथा उन्हीं के अनुकूल भाषायी तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों को उचित सुरक्षा प्रदान करना। अगर हम दक्षिण एशिया के अन्य पड़ोसी; यथा- पाकिस्तान, नेपाल तथा श्रीलंका के राष्ट्रीय-राज्य की विफलता से भारत की तुलना करते हैं तो अंतर स्पष्ट हो जाता है।

आर्थिक सफलता में भी एक उचित सांस्कृतिक नीति की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। रघुराम राजन ने बहुत पहले स्पष्ट कर दिया था कि धार्मिक रूढ़िवादिता तथा आर्थिक विकास साथ-साथ नहीं चल सकता। अंत में, संस्कृति आन्तरिक सुरक्षा में भी एक महत्वपूर्ण कारक की भूमिका निभाती है। वर्तमान में आंतरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है धार्मिक कट्टरता। इसने आतंकवाद का रूप ले लिया है। एक उचित सांस्कृतिक नीति के माध्यम से ही इस पर नियंत्रण लगाया जा सकता, न कि केवल पुलिस एवं सैन्य बल के माध्यम से। इस संबंध में भारत का नज़रिया व्यावहारिक रहा है। इसने बहुत हद तक अपने विविधतामूलक चरित्र का सम्मान किया है।

कला एवं संस्कृति खंड से विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

प्रश्न: "भारत की प्राचीन सभ्यता, मिस्र, मेसोपोटामिया तथा ग्रीस की सभ्यताओं से इस बात में भिन्न है कि भारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएँ आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई हैं।" टिप्पणी कीजिये।(2015)

प्रश्न: "भारत की मध्यपाषाण शिला-कला न केवल उस काल के सांस्कृतिक जीवन को बल्कि आधुनिक चित्रकला से तुलनीय परिष्कृत सौंदर्य-बोध को भी प्रतिबिंबित करती है।" इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।(2015)

प्रश्न: क्या हमारे राष्ट्र में सर्वत्र लघु भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र हैं? उदाहरणों के साथ सविस्तार स्पष्ट कीजिये। (250 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2019)

प्रश्न : शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास के ज्ञान के अति महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक प्रतिनिधित्व करता है। विवेचना कीजिये। (150 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2020)

प्रश्न: भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्त्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिये। (150 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2020)

प्रश्न: क्या आप सहमत हैं कि भारत में क्षेत्रीयता बढ़ती हुई सांस्कृतिक मुखरता का परिणाम प्रतीत होती है? तर्क कीजिये। (150 शब्दों में उत्तर दीजिए) (2020)

प्रश्न: भारतीय दर्शन एवं परंपरा ने भारतीय स्मारकों की कल्पना और आकार देने एवं उनकी कला में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विवेचना कीजिये। (250 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2020)

प्रश्न: मध्यकालीन भारत के फारसी साहित्यिक स्रोत उस काल के युगबोध का प्रतिबिंब हैं। टिप्पणी कीजिये। (250 शब्दों में उत्तर दीजिए)(2020)

प्रश्न: भक्ति साहित्य की प्रकृति का मूल्यांकन करते हुए भारतीय संस्कृति में इसके योगदान का निर्धारण कीजिये। (150 शब्दों में उत्तर दीजिए)(2021)

प्रश्न: स्पष्ट करें कि मध्यकालीन भारतीय मंदिरों की मूर्तिकला उस दौर के सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। (150 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2022)

प्रश्न: भारतीय परंपरा और संस्कृति में गुप्त-काल और चोल-काल के योगदान पर चर्चा करें। (250 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2022)

प्रश्न: भारतीय मिथक, कला और वास्तुकला में सिंह एवं वृषभ की आकृतियों के महत्त्व पर विचार करें। (250 शब्दों में उत्तर दीजिये)(2022)

******